Subject : Maithili (PG)

Paper Code / Name : CC-8, MTL 524/ समालोचना, पत्र-पत्रिका

Topic : मैथिली पत्रकारिताक विकास-क्रम

Formal : PDF

Name : Dr. Sudhir Kumar Jha

Contact Details : Department of Maithili
Patna University
Mobile- 9661819662
email - drsudhirkrjha1170@gmail.com

Scanned with CamScanner

मैथिली पत्रकारिताक विकास-क्रम

जेना साहित्य जीवनक दर्पण होइत छैक तहिना जीवनक सूक्ष्म सँ सूक्ष्म अभिव्यक्ति पत्र- पत्रिकाक माध्यम सँ चित्रित होइत अछि। दोसर शब्द मे कहि सकैत छी जे सामूहिक अन्तरंग सँ अन्तरंग प्रवृत्तिक जीवैत स्वरूप अछि : पत्र- पत्रिका। भारतवर्ष मे पत्रकारिता अंग्रेज लोकनिक देन थिक। अठारहम शताब्दीक सातम दशकक अन्तिम वर्ष (1780) जखन बंगाल मे ईस्ट इण्डिया कम्पनीक शासन नीक जकाँ सुव्यवस्थित भए गेल तखन 'बंगाल गजेट' नाम सँ साप्ताहिक पत्र आरम्भ भेल जकर सम्पादक जेम्स ऑगस्टस हिकी नामक एक अंग्रेज छलाह। ई पत्र 'हिकी गजेट' नाम सँ सेहो ख्याति पओलक। बाद मे ब्रिटिश शासनक बढ़ैत क्षेत्रक अनुरूप आनहु ठाम सँ पत्र सभ बहराए लागल मुदा सब अंग्रेजे लोकनि द्वारा संचालित भए रहल छल। भारतीय भाषा मे पहिल पत्र प्रकाश मे आएल — 'बंगाल गजेट'। ई बंगला भाषाक एक साप्ताहिक पत्र छल।

मैथिली मे पत्रकारिताक श्रीगणेश कनेक विलम्ब सँ भेल। पहिल पत्रिका 'मैथिल हितसाधन' मिथिलांचल सँ बहारो नहि भेल, ई तँ जयपुर सँ प्रकाशित भेल। आन-आन भाषाक देखादेखी,प्रवास मे मैथिल लोकनि कैं एकसूत्र मे जोड़बाक उद्देश्ये आ अपन साहित्य कैं समृद्ध करबाक प्रयोजने मैथिली मे पत्रकारिता आरम्भ भेल।

मैथिली पत्रकारिता विविधता सँ ओतोप्रोत अछि। इएह विविधता एकर सभ सँ पैघ वैशिष्ट्य थिकैक। पहिल मासिक पत्रिका 'मैथिल हित साधन' (1905) सँ लए त्रैमासिक 'लहरि' (अप्रैल-जून,2019) धरि कतेको नव-नव प्रयोग मैथिली पत्रकारिता मे कएल गेल। दैनिक, अर्धसाप्ताहिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक, चतुर्मासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक ओ अनियतकालीन पत्रिका बहार भेल। हस्तलिखित पत्रिका (कोइलख सँ 'प्रभात'), पोस्टकार्ड पत्रिका (कलकत्ता सँ 'मि' एवं लोहना सँ 'विचार'), हवाई पत्रिका (नेपाल सँ मासिक 'पल्लव'), लेथो पत्रिका ('चाङुर'क प्रारम्भिक किछु अंक), जेबी पत्रिका (पटना सँ 'कूस'), फोल्डर पत्रिका (दरभंगा सँ 'समय-सन्दर्भ' एवं 'चर्च्चा', सहरसा सँ 'सह-रसा', मुंगेर सँ 'अंग मैथिली', सरिसब-पाही सँ 'साहित्यिकी', पटना सँ 'बाल मिथिला', नेपाल सँ 'कमला' आ धनबाद सँ 'मिथिजन' पत्रिकाक विविध रूपक द्योतक थिक।

Scanned with CamScanner

अमेरिका ('मैथिली', सम्प. शान्ता मिश्र) एवं रूस ('मैथिली समाज', सम्प. (अजित कुमार दास) सँ सेहो मैथिली पत्रिका बहराएल जे विदेश मे रहनिहार मैथिल लोकनिक अपन भाषाक प्रति चेतना कैं प्रकट करैत अछि। किछु पत्रिका विधा विशेष कैं समर्पित रहल अछि। यथा- 'मैथिली कविता' (अप्रैल 1968, त्रैमासिक, कलकत्ता, सम्प. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'), 'अनामा- कथादिशा' (नवम्बर 1965, अनियतकालीन, सम्प. कालपुरुषक छद्मनाम सँ, पुन: नवम्बर 1978 सँ जनवरी 1980, मासिक, सम्प. गंगेश गुंजन एवं प्रभास कुमार चौधरी), 'मैथिली आलोचना' (फरवरी 1992, अनियतकालीन, पटना, सम्प. मोहन भारद्वाज), 'मैथिली समीक्षा' (1973, लहेरियासराय, सम्प. रमानन्द रेणु), मिथिला रिसर्च सोसाइटीक 'मिथिला भारती' (1969, पटना, त्रैमासिक, सम्प. डॉ. जगदीश चन्द्र झा), तंत्रवती शोध एकांशक 'जिज्ञासा' (1995, अर्धवार्षिक, राँटी, सम्प. गोविन्द झा), भंगिमा (1985, छमाही, पटना, सम्प. छत्रानन्द सिंह झा)। भाषा आंदोलन सँ सम्बद्ध पत्रिका सेहो छपल। उदाहरणार्थ 'समाद' (1978, साप्ताहिक, पटना, सम्प. रवीन्द्रनाथ ठाकुर) एवं 'विकल्प' (1979, साप्ताहिक, पटना, सम्प. विवेकानन्द झा)। 3 अगस्त, 1978 कैं बिहार सरकार 1949 मे मैथिली कैं मातृभाषाक रूप मे प्रवेशिका परीक्षाक हेतु देल गेल स्वीकृति कैं आपस लेबाक प्रस्ताव पारित कएलक। एकरे प्रतिक्रिया स्वरूप उक्त दुनू साप्ताहिक पत्रिकाक प्रादुर्भाव भेल। एकहि पत्रिकाक विभिन्न रूप मे प्रकाशन सेहो देखबा मे अबैत अछि। जेना 'मिथिला मिहिर' दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक आ मासिक रूप मे बहार भेल, 'भारती मण्डन' (1995, सुपौल, सम्प. केदार कानन) त्रैमासिक आरम्भ भेल आ तीने अंकक उपरान्त अनियतकालीन भए गेल। 'रचना' (1984, दरभंगा, सम्प. कालीनाथ झा) पहिल खेप मासिक छल, दोसर खेप (2001, दरभंगा, सम्प. विश्वनाथ झा) त्रैमासिक मे परिवर्तित भए गेल। एकहि संस्था सँ प्रकाशित दू नामक पत्रिका सेहो भेटैत अछि - मैथिली अकादमी 'मिथिला भारती' (1979 द्विमासिक, पटना, सम्प. पं. उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास') नाम सँ पत्रिका आरम्भ कएलक मुदा किछु अंकक उपरान्त ओ 'मैथिली अकादमी पत्रिका' (1981, द्विमासिक, पटना, सम्प. योगानन्द झा) मे रूपान्तरित भए गेल। अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद 'परिषद पत्रिका' क बाद 'सीता' सेहो छपलक। एकहि नामक पत्रिका दुइ ठाम सँ बहराइत अछि - 'प्रवासी' (इलाहाबाद आ हैदराबाद सँ)। 'कर्णामृत' (1981, त्रैमासिक, कलकत्ता, सम्प. राजनन्दन लाल दास) कर्ण कायस्थक जातीय पत्रिका थिक तथापि रचना प्रकाशन मे जातीय बन्धनक कोनो शर्त नहि अछि। 'बटुक' (1949 मासिक, प्रयाग, सम्प. रमाकान्त मिश्र एवं सुधाकान्त मिश्र), 'चौपाड़ि' (1952, मासिक, पटना, सम्प. बाबू लक्ष्मीपति सिंह) 'धीया-पुता' (1957, मासिक, लोहना, सम्प. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र') एवं

Scanned with CamScanner

'शिशु' (सम्प. महिनाथ झा) बालवर्गक पत्रिका थिक तँ 'कोसी कुसुम' (1984, द्विमासिक, सहरसा, सम्प. अम्बिका मिश्र) महिला प्रधान।

कोनहुँ भाषाक विकास लेल दैनिक पत्र बहराएब आवश्यक ओ नितान्त अनिवार्य थिक। दैनिकेर अभाव मे पत्रकारिता अपूर्ण थिक। प्रो. भीमनाथ झा कहैत छथि —

पत्र तँ असल मे दैनिके थिक। दैनिक सँ इतर जे थिक, से जँ पत्र थीको तँ वास्तव मे पत्रिके थिक। पत्रिका मुख्यत: साहित्य केँ सम्पोषित करैत अछि, पत्र भाषा केँ। पत्रिका चिन्तनक मंच होइछ, पत्र चिन्ता केँ उजागर करैछ। पत्रिकाक रुझान स्थायी सामग्री दिस बेसी, मुदा पत्रक झुकाव टटके दिस। पत्रिका समसामयिकताक आग्रही, पत्र दैनिक घटनाक संग्रही। पत्रिकाक लक्ष्य 'खास' होइछ, पत्रक लक्ष्य 'मास' होइछ। मास अर्थात् जनसमूह पत्रे सँ जुड़ि सकैछ।[1]

अद्यावधि मैथिली मे दैनिक रूप मे तीन गोट पत्रक नाम अबैत अछि — पहिल 'स्वदेश' (9 अक्टूबर, 1955–27 दिसम्बर, 1955, दरभंगा, सम्प. पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन') ओ दोसर 'मिथिला मिहिर' (20 फरवरी, 1984 सँ 15 जून, 1986, पटना, सम्प. हीरानन्द झा शास्त्री एवं जयेन्द्र नारायण चौधरी)। तेसर दैनिक पत्रक प्रकाशन 2008 मे कलकत्ता सँ 'मिथिला समाद' नाम सँ प्रारम्भ भेल अछि। एकर सम्पादक थिकाह - ताराकान्त झा, एकर पहिल अंकक लोकार्पण 31 अगस्त, 2008 केँ भेल। मैथिली पत्रकारिताक श्रीगणेश मिथिला सँ सुदूर राजस्थानक राजधानी जयपुर सँ 'मैथिल हित साधन' क रूप मे भेल। एकर सम्पादकद्वय द्वलाह - विद्यावाचस्पति पं. मधुसूदन झा आ पं. रामभद्र झा। एकर स्वरूप मासिक द्वलैक। प्रस्तुत पत्रिकाक प्रधान उद्देश्य द्वल मातृभाषाक प्रचार करब एवं मैथिली मे गम्भीर साहित्यक निर्माण करब। विवेच्य पत्रिकाक दोसर वर्षक पहिल अंक मे विशेष रूप सँ एकर गम्भीर उद्देश्यक घोषणा स्पष्ट शब्द मे कएल गेल —

जनिका सबहिकेँ हा-हा-ही-ही, लल्लो-चप्पो, गीत-कवित्तक अतिरिक्त गम्भीर लेख सबहिक रसास्वादक योग्यता नहि तनि तादृश व्यक्तिक ग्राहक नहि रहला सँ हित साधनक कोनोटा त्रुटि नहि।[2]

पुलकित लाल दासक शब्द मे,

मैथिल हित साधन अत्यन्त क्षीणकाय एवं अल्पजीवी

Scanned with CamScanner

होएबाक कारणेँ मैथिल समाजक तेहन कोनो विशेष हित साधन नहि कए सकल। तीनिये-चारि वर्ष प्रकाशित भै ई पत्र काल कवलित भै गेल छल। किन्तु मैथिली भाषा मे सर्वप्रथम सामयिक पत्रक सूत्रपात करबाक कारणेँ एहि पत्रक सञ्चालकगण अवश्य विशेष धन्यवादार्ह छिकाह।[3]

1905 मे काशी सँ मैथिलीक दोसर पत्रिका 'मिथिलामोद' शीर्षक सँ बहराएब आरम्भ भेल। एकर सम्पादक छलाह - म.म. मुरलीधर झा। एहि मे सब विधाक रचना छपैत छल जाहि मे प्रौढ़ निबन्ध, भाषण यात्रा-वृत्तांत, कविता, दीर्घ अनुवाद आओर सामाजिक प्रसंग पर टिप्पणी मुख्य रहैत छल। किरणजीक प्रख्यात कथा 'धर्मरत्नाकर' सर्वप्रथम एही मे प्रकाशित भेल। पं. रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र' लिखित काव्यशास्त्र विषयक पोथी 'चन्द्राभरण' सभ सँ पहिने मोदहि मे छपल। गुणवन्त लाल दासक पद्यमय 'गौरी परिणय' नाटक, कविवर जीवन झाक 'नर्मदा सागर सट्टक' पंडित शशिनाथ झाक 'कलिधर्मप्रकाशिका'क प्रकाशन सेहो पहिले पहिल एही मे भेल।

वस्तुत: मोदकालहिक भीत्ति पर मैथिलीक आधुनिक साहित्य आ पत्र- पत्रिकाक एखुनका दुमहला-तिमहला ठाढ़ अछि।

मिथिलांचल सँ बाहर दुइ पत्रिकाक प्रकाशनक पश्चात् 1909 मे दरभंगा सँ, राज दरभंगाक सहायता सँ 'मिथिला मिहिर'क प्रकाशन आरम्भ भेल। एकर प्रथम सम्पादक भेलाह - पं. विष्णुकान्त झा शास्त्री। ई पत्रिका दरभंगा (1909-54) आ पटना (1960-89) दुनू ठाम सँ बहार भेल। ई मासिक, साप्ताहिक, दैनिक, पाक्षिक आ अन्त मे पुन: मासिक रूप मे बहराएल। दरभंगा मे एकर सम्पादन करबाक अवसर निम्न विद्वान कें भेटलन्हि - पं. विष्णुकान्त झा शास्त्री, योगानन्द कुमर, जनार्दन झा 'जन-सीदन', कपिलेश्वर झा शास्त्री तथा पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन'। पटना मे सम्पादनक भार दीर्घावधि धरि सुधांशु 'शेखर' चौधरीक जिम्मा रहल, बाद मे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', मन्त्रनाथ झा 'हंसराज', प्रो. भीमनाथ झा, गोकुल नाथ झा, दिलीप कुमार सिंह झा आ शरदिन्दु चौधरी सम्पादन मण्डल सँ सम्बद्ध भेलाह।

मैथिली पत्रिका मध्य 'मिथिला मिहिर' दीर्घायु भेल। दरभंगा सँ प्रकाशित मिहिरक चारि गोट स्थापित लेखक छलाह - म. म. मुकुन्द झा 'बख्शी', मिथिला राजकुलभूषण बाबू तुलापति सिंह, म० म० वैयाकरणकेशरी परमेश्वर झा आ महाकवि लालदास। आरम्भ मे मिहिर दुभाषिया छल, बाद मे तिभाषिया भए गेल। सुमनजीक सम्पादक बनबा सँ पूर्व दरभंगा सँ प्रकाशित 'मिथिला मिहिर' कोनो विशेष महत्वक काज नहि कए सकल। तकर प्रमाण रूप मे हरिमोहन बाबूक निम्न पाँती द्रष्टव्य थिक-

हे मिहिर! फोउ आग्नेय नेत्र बरसाउ तेज वैभव विशाल।
स्वतलि सितहलि सिहरलि मिथिला पर तानू स्वर्णिम रश्मि जाल॥
— — — — — — — — —

Scanned with CamScanner

चाही न आब शिशिरक प्रभात आनू ग्रीष्मक मध्याह्न काल।
समटा सेमार जरि होय छार धधकाऊ तादृश तीव्र ज्वाल॥4

सुमनजी कें 1935 मे सम्पादनक दायित्व भेटलन्हि। 1936 मे ओ 'मिथिलांक' नाम सँ एकटा विशेषांक बहार कएलन्हि जकरा डॉ. जयकान्त मिश्र Store House क संज्ञा सँ अभिहित कएने छथि। ध्यातव्य जे एहू मे प्रमुखता हिन्दीएक छलैक। हिन्दीक रचना 192 पृष्ठ मे छपल अछि आ मैथिलीक रचना तकर आधा 100 पृष्ठ। विषयवस्तुक दृष्टिएँ मिथिलाक सर्वांगीण परिचय एहि मे भेटैत अछि। मिथिला, मैथिल ओ मैथिली सँ सम्बद्ध तत्कालीन समस्त कार्यवाहीक 'एलबम' थिक सुमनजीक सम्पादन अवधिक मिथिला मिहिर। एहि मे धारावाहिक रूप मे अनेक मौलिक एवं अनूदित रचना प्रकाश मे अबैत रहल। उदाहरणार्थ-

महाकाव्य मे साहित्य रत्नाकर मुन्शी रघुनन्दन दास रचित 'सुभद्रा-हरण', महाकवि सीताराम झा रचित 'अम्ब-चरित', मथुरानन्द चौधरी रचित 'कानन-कन्या' महाकाव्य। डॉ. सुभद्र झा लिखित 'हमर विदेश यात्रा', जगदीश्वर प्रसाद ओझा लिखित 'आगम-रहस्य', डॉ. कृष्ण मिश्र सृजित 'कन्यादानक समीक्षा' पं. जनार्दन झा 'जनसीदन' रचित 'द्विरागमन-रहस्य', पं. मतिनाथ मिश्रक 'सौभाग्य सिन्दूर' ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' क अनल-पथ', तंत्रनाथ झा लिखित भवभूतिक 'मालती माधव' नाटकक कथासार, दिगेश्वर सिंह रचित 'गौरी-परिणय' खण्डकाव्य, मिथिलेश महेश रमेश व्याख्यानमालाक अन्तर्गत कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शीक संस्कृत भाषा मे देल दीक्षांत भाषण। एहिना अनूदित साहित्य मे शरतचन्द्रक अनेक बंगला उपन्यास - सुमनजी द्वारा अनूदित 'बड़की दाइ', उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' द्वारा अनूदित 'बाभनक बेटी' जितेन्द्र नारायण झा द्वारा अनूदित 'चन्द्रनाथ' ओ 'विलासी', पं. लक्ष्मीनाथ झा द्वारा अनूदित वाजसनेयि वैवाहिक मन्त्रक मैथिली रूप आदि अनेक पोथी एहि मार्फत प्रकाश मे आएल।

उपर्युक्त अवधि मे मिहिर भाषा-शैलीक प्रसंग उदार छल। जे लेखक जहिना लिखैत छलाह तनिक रचना ताही शैली मे छपैत छलन्हि। जमीन्दार संरक्षित पत्र होएबाक कारणें जमीन्दारी उन्मूलनक विरोधी छल। स्त्री-शिक्षा कें आवश्यक मानैत छल मुदा शिक्षा मे आधुनिक प्रणालीक विरोधी छल।

पटना सँ 'मिथिला मिहिर' क प्रकाशन 10 सितम्बर, 1960 सँ सुधांशु 'शेखर' चौधरीक सम्पादन मे आरम्भ भेल। एकर दोसर पारी अनेक दृष्टि सँ उल्लेखनीय अछि। साहित्यक कोनो विधा नहि छूटल जे एहि मे अपन स्थान सुरक्षित ने कराए लेलक। एहि मे विविध स्तम्भक माध्यमे सभ वयसक लोक लेल सामग्री रहैत छल। क्रीड़ा आ

Scanned with CamScanner

सिनेमा लेल अतिरिक्त स्तम्भ छलैक। शेखरजी स्वयं छद्मनाम सँ अनेक उपन्यास लिखलन्हि। आजुक अधिकांश साहित्यकार आ आलोचक-निबन्धकार शेखरजीक उपजा छिकाह। महिला साहित्यकार लोकनिक प्रादुर्भावक स्रोत सेहो सम्पादक महोदय स्वयं छलाह। मिथिलाक्षर कें पुनर्जीवित करबाक दिशा मे एकर योगदान प्रशंसनीय रहल अछि।

निष्कर्षतः सभ दृष्टि सँ 'मिथिला मिहिर' मैथिली कें सुसम्पन्न कएलक।

1920 मे पुनः मिथिला सँ दूर अजमेर सँ पं. रामचन्द्र मिश्र 'जैन'क सम्पादन मे 'मैथिल प्रभा' नामक हिन्दी-मैथिली मासिक पत्रिका आरम्भ भेल। ई अगस्त 1924 धरि बहराइत रहल। जैन साहेब फेरो अक्टूबर 1928 मे अलीगढ़ सँ 'मिथिला प्रभाकर' नाम सँ मासिक पत्रिकाक श्रीगणेश कएलन्हि। इहो मात्र पन्द्रह मास जीवित रहि सकल। 1925 मे दरभंगा सँ 'श्रीमैथिली' (मासिक) शुरू भेल। एकरा पहिल विशुद्ध मैथिली पत्रिका होएबाक सौभाग्य भेटलैक। एकर सम्पादकद्वय छलाह उदित नारायण दास एवं नन्द किशोर लालदास। एकरो जीवन मात्र दुइए वर्ष रहलैक। मैथिली गद्यक विकास मे एकर प्रमुख भूमिका रहल छैक। 1929 मे कुशेश्वर कुमर आ बाबू भोला लाल दासक संयुक्त सम्पादन मे लहेरियासराय सँ 'मिथिला' नामक पत्रिका आरम्भ भेलैक। एहि मे प्राचीन ओ नवीन दुनू विचारधाराक साक्षात्कार भेल। 1937 क वसन्त पञ्चमी सँ मैथिली साहित्य परिषदक संरक्षणता मे 'भारती' (मासिक) प्रकाशन भेल, बाबू भोला लाल दास सम्पादक छलाह। साहित्यिक निबन्ध, यात्रा, समालोचन एवं प्राचीन स्थायी मूल्यक वस्तुक प्रकाशनक दृष्टि सँ ई महत्वपूर्ण पत्रिका सिद्ध भेल। विश्वविद्यालय मे मैथिली कें स्वतन्त्र भाषाक रूप मे स्थान दिआएबाक आन्दोलन कें आगाँ बढ़एबा मे एकर मुख्य भूमिका रहलैक। मैथिली आन्दोलन कें बल प्रदान करबा लेल एकरा मार्फत जानकी नवमी, विद्यापति जयन्ती आदि पर्व कें मनएबा पर जोर देल गेल। बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क सम्पादन मे मार्च 1937 मे मुजफ्फरपुर सँ मासिक 'विभूति' आरम्भ भेल। भुवनजी, भवनाथ शर्मा 'साहित्यालंकार'क छद्मनाम सँ एकर सम्पादन करल। विभूति अपन गीत पत्रकारिता हेतु प्रसिद्ध रहल। प्रो. रमानाथ झाक सम्पादकत्व मे दरभंगा सँ 1936 मे 'साहित्य पत्र' नामक त्रैमासिक पत्रिका बहराएब प्रारम्भ भेल। पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एकरा पत्रिका नहि अपितु ग्रन्थमालाक आख्या दैने छथि। एहि मे उदयन कथा, वेकफिल्डक पादरी, चीनीक लड्डू, शकुन्तला, शृंगारभजन, एकावली-परिणय, कीचक-वध आदि उत्कृष्ट कोटिक ग्रन्थ सभक प्रकाशन सँ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि भेल। 'साहित्य पत्र' सभ सँ उल्लेखनीय कार्य मैथिली लेखन शैली कें व्यवस्थित करब। तत्कालीन विभिन्न वर्गक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान ओ भाषाविद् लोकनिक सम्मति लए सभक मत कें ध्यान मे रखैत मैथिली ध्वनिक अनुकूल लेख

Scanned with CamScanner

शैली निश्चित कएल गेल तथा ओही शैली मे पोथी सब मुद्रित भेल। तात्पर्य जे एहि पत्र द्वारा मैथिली वर्तनी आ लेखन शैलीक व्यवस्थापन मे विशेष योगदान भेटलैक। जनवरी 1948 मे दरभंगा सँ पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन'क सम्पादन मे 'स्वदेश' मासिक आरम्भ भेल। ई मात्र दुअो अंक प्रकाशित भेल। सामग्री संचयन, सम्पादन एवं मुद्रणक दृष्टिएँ ई मैथिलीक एक मानक पत्रिका साबित भेल।

मिथिला मिहिरक उपरान्त 'वैदेही' दोसर दीर्घजीवी पत्रिका भेल। एकर आरम्भ 26 जनवरी, 1950 सँ सीतामढ़ी सँ पाक्षिक रूप मे भेल। एकर सर्वेसर्वा छलाह - प्रो. कृष्णकान्त मिश्र। मइ 1950 सँ एकर कार्यालय सीतामढ़ी सँ दरभंगा चलि आएल। एकर सम्पादन सँ पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', सुरेन्द्र झा 'सुमन', सुधांशु 'शेखर' चौधरी, सोमदेव, रमानन्द रेणु आ हंसराज सम्बद्ध रहलाह। मैथिलीक अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन पोथी केँ प्रकाश मे अनबाक श्रेय एकरा छैक। एकर कैकटा विशेषांक सेहो बहार भेल। मिहिर सदृश इहो नवीन लेखक सभ केँ जन्म देलक।

1960 सँ प्रो. माधानन्द मिश्रक सम्पादन मे 'अभियंजना' द्विमासिक पटना सँ आरम्भ भेल। एक अंक निकललाक उपरान्त एकर प्रकाशन स्थल सहरसा भए गेल। एकटा साहित्यिक संकलन रूप मे ई मैथिली कथा एवं कविता मे नव्यता केँ प्रोत्साहित कएलक। पटने सँ 1969 मे भारतीभक्तक सम्पादन मे 'सोनामाटि' नामक मासिक बहराएब शुरू भेल। समीक्षात्मक - विचारात्मक निबन्ध, प्रेतकथा, शिकार-कथा, देश-दर्शन आदिक माध्यम सँ पाठक केँ आकर्षित करबाक प्रयत्न एहि पत्रिकाक उपलब्धि कहल जाए सकैत अछि। 1981 मे कलकत्ता सँ बहराएल 'देसकोस'। एकर स्वरूप मासिक छलैक, समाचार प्रधान पत्रिका छल, यद्यपि साहित्यिक रचना सेहो छपैत छल। एकर सम्पादक छलाह विनोद कुमार झा। अगस्त 1983 सँ उदयचन्द्र झा 'विनोद' आ विभूति आनन्दक संयुक्त सम्पादन मे पटना सँ 'माटि-पानि' मासिक आरम्भ भेल जे प्रायः अठारह अंक धरि चलल। विभिन्न स्तम्भ सँ समन्वित ई पत्रिका समाचार-विचार एवं साहित्यिक-राजनीतिक निबन्ध द्वारा मैथिली पत्रकारिता केँ नूतन आयाम देबा मे सफल भेल।

उपर्युक्त विवेचित पत्रिकाक अतिरिक्त 'मिथिलामित्र' (1931-32, पाक्षिक, बनैली, सम्प. कृष्णानन्द सिंह), 'मैथिल बन्धु' (1935 मासिक, अजमेर, सम्प. रघुनाथ प्रसाद मिश्र 'पुरोहित' एवं लक्ष्मीपति सिंह), 'मैथिल युवक' (1938-41, मासिक, अजमेर, सम्प. चुन्नीलाल झा), 'जीवन प्रभा' (1950-56 मासिक, आगरा एवं झाँसी, सम्प. ब्रजमोहन झा), 'सत्य सन्देश' (1953 मासिक, काबी, सम्प. कांचीनाथ झा 'किरण'), 'मिथिला ज्योति' (1958, पटना, मासिक, सम्प. बाबू दुर्गापति सिंह), 'मिथिला दूत' (1955, मासिक, कानपुर, सम्प. सम्पत्ति मिश्र), 'नूतन विश्व' (1954, मासिक, लहेरियासराय, सम्प. जिरिधर नारायण),

Scanned with CamScanner

'मिथिला' (1952, साप्ताहिक, दरभंगा, सम्प. लक्ष्मण झा), 'अभिमान' (1963, त्रैमासिक, पटना, सम्प. प्रो. आनन्द मिश्र), 'मैथिल प्रकाश' (1968, अर्धवार्षिक, कलकत्ता, सम्प. इन्द्रगोविन्द झा), 'आखर' (1967, मासिक, कलकत्ता, सम्प. कीर्तिनारायण मिश्र एवं वीरेन्द्र मल्लिक), 'स्वाती' (त्रैमासिक, मुजफ्फरपुर, सम्प. कमला चौधरी), 'मिथिला परिक्रमा' (सम्प. शंकर कुमार झा), 'कचोट' (अप्रैल 1999, द्विमासिक, जमशेदपुर, सम्प. अशोक अविचल), 'आकांक्षा' (मासिक, दरभंगा, धीरेन्द्रनाथ मिश्र), 'कोशी कमला' (मासिक, पटना, सम्प. त्रिलोकनाथ मल्लिक), 'वागमती दामोदर टाइम्स' (त्रैमासिक, दिल्ली, सम्प. मनोज कुमार झा), 'अँकुर' (त्रैमासिक, दिल्ली, सम्प. हेमचन्द्र), 'पूर्वांचल' (1991, त्रैमासिक, दिल्ली, सम्प. राधा माधव भारद्वाज एवं संजीव कुमार), 'संधान' (1997, वार्षिक, पटना, सम्प. अशोक), 'आरम्भ' (त्रैमासिक, पटना, सम्प. राजमोहन झा), 'मैथिली चेतना पत्रिका' (अक्टूबर 1992, मासिक, पटना, सम्प. पं. गोविन्द झा), 'अंतिका' (जनवरी 1999, त्रैमासिक, दिल्ली, सम्प. अनलकान्त), 'समय साल' (2000, द्विमासिक, पटना, सम्प. गजेन्द्र चौधरी), 'मिथिला दर्पण' (सितम्बर-अक्टूबर 2005, द्विमासिक, मुम्बई, सम्प. रमा झा), 'जखन-तखन' (मार्च 2005, त्रैमासिक, दरभंगा, सम्प. विभूति आनन्द एवं अशोक कुमार मेहता), 'हालचाल' (2006, मासिक, दरभंगा, सम्प. अमरकान्त कुमर), 'हिलकोर एक दिशा' (सितम्बर 2005, पाक्षिक, दरभंगा, सम्प. विनोद कुमार) आ 'मैलोरंग' (जनवरी 2008, चतुर्मासिक, दिल्ली, सम्प. प्रकाश झा) आदि उल्लेखनीय पत्रिका रहल अछि।

नेपाल सँ प्रकाशित पत्रिकाक विवरण :- 'फूलपात' (1968, काठमाण्डू, सम्प. सुन्दर झा शास्त्री), 'इजोत' (1970, काठमाण्डू, सम्प. हरदेव मिश्र एवं ओम कुमार झा), 'अर्चना' (1973, द्विमासिक, जनकपुर, सम्प. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'), 'वाणी' (1980, राजविराज, सम्प. परमेश्वर सिंह), 'हिलकोर' (1982, भद्रपुर, सम्प. प्रदीप बिहारी), 'गामघर' (1982, साप्ताहिक, जनकपुर, सम्प. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'), 'जनक' (द्विमासिक, जनकपुर, सम्प. उदयकान्त ठाकुर), 'दुविधान' (1986, त्रैमासिक, राजविराज, सम्प. दुर्गाप्रसाद देव सुवास एवं त्रिलोकनाथ मल्लिक), 'आंगुर' (1988, द्विमासिक, जनकपुर, सम्प. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'), 'प्रभात' (1990, त्रैमासिक, बिराटनगर, सम्प. जीतेन्द्र जीत), 'पल्लव' (1993, काठमाण्डू, सम्प. धीरेन्द्र प्रेमर्षि)।

ओहन पत्रिकाक सूची जे निरन्तर पाठकक सोझाँ आबि रहल अछि - 'मिथिला दर्शन' (कोलकाता, सम्प. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'), 'कर्णामृत' (कोलकाता, सम्प. राजनन्दन लाल दास), 'भंगिमा' (पटना, सम्प. विभूति आनन्द, दत्रानन्द सिंह झा, कुणाल, किशोर कुमार झा, प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', अजित कुमार आजाद, कुमार गौलेन्द्र, अभय कुमार यादव, वन्दना किशोर, उमाकान्त झा), 'घर-बाहर' (पटना, सम्प. रमानन्द झा 'रमण'), 'भारती-मंडन' (सुपौल, सम्प. केदार कानन), 'पूर्वोत्तर मैथिल' (गुवाहाटी, पटना, मधुबनी,

Scanned with CamScanner

सम्प. प्रेमकान्त चौधरी), 'कोसी-संदेश' (मधुबनी, सम्प. गिरिजानन्द झा 'अर्धनारीश्वर'), 'सांध्य गोष्ठी' (पटना, सम्प. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'), 'तीरभुक्ति' (नई दिल्ली, सम्प. विनीत उत्पल एवं रूपेश पाठक) एवं 'लहरि' (राँची, सम्प. नरेन्द्र झा)।

मैथिली पत्रकारिताक आरम्भ भेना शताधिक वर्ष भए गेल। एहि अवधि मे पत्रकारिता अनेक सम्पादक एवं नव-नव स्थल कैँ देखलक। उक्त समयावधि मे बहराएल पत्रिका सभ यद्यपि समसामयिक सामाजिक-राजनीतिक चेतना कैँ सेहो पाठकक समक्ष अनलक मुदा एकर मुख्य स्वर साहित्यिक रहलैक। मैथिली साहित्यक इतिहास, मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक बड़ सन्निकट छैक। पत्रिके सभ मे प्रकाशित कथा, कविता, उपन्यास, महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, निबन्ध, समीक्षा, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, साक्षात्कार आदिक आधार पर तँ मैथिली साहित्यक इतिहास केर निर्माण भेल छैक। बेसी पत्रिका सभ अल्पजीवी भेल परन्च एकरा मे निरन्तरता रहलैक अछि। पत्रकारवला निर्भीकता ओ तेवर मैथिलीक पत्रकार मे द्रष्टव्य नहि होइत अछि। तैँ ओहन सामग्री पाठकक सोझाँ नहि आबि पबैत अछि जकर सेहन्ता ओलोकनि अपन मनोमस्तिष्क मे पोसने रहैत छथि। मात्र साहित्य सँ सम्बद्ध विषय सामान्य पाठकक ध्यान आकर्षित नहि कए सकैत अछि। पाठक कैँ टटका समाचार चाहिऐक, चारू दिशुका गप्पक जानकारी चाहिऐक, खेलकूद सँ लए शेयर बाजारक उठा-पटक, राजनीतिक सरगर्मी, प्रतियोगिता मे सफलता पएबा लेल टिप्स, फिल्मलोकक रोमांटिक्सा ओ तत्व थिकैक जे पाठक कैँ अपना दिस खींचि सकैत अछि आ ई सबटा भए सकैत छैक दैनिक पत्र द्वारा। पत्रिका सँ साहित्यक विकास सम्भव छैक मुदा भाषाक उत्थान लेल दैनिकक अनिवार्यता कैँ अनठिआओल नहि जाए सकैत अछि।

सन्दर्भ - संकेत

1. विमर्श: डॉ. भीमनाथ झा, पृ-84,85
2. मैथिली पत्रकारिताक इतिहास: चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', पृ-27
3. तत्रैव
4. तत्रैव, पृ-293, 294
5. तत्रैव, पृ-294

Scanned with CamScanner